IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत-जापान संबंध 2000 से अध्यतन

मयंक सिंह
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ रजनीकान्त पाण्डेय
आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश:-

सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फ़ौज से लेकर, मेरा जूता है जापानी की भावना और आधुनिक युग की मेट्रो रेल, कार और टेलीविजन सेट से आने वाले बुलेट ट्रेन के समाचार तक, उगते हुए सूरज के देश जापान के साथ भारत की स्वतंत्रा के बाद से अब तक का 77 साल पुराना रिश्ता एक खास मायने रखता है। वैश्विकरण, उदारीकरण और निजीकरण की नीति को अपनाने के बाद से भारत लगातार विदेशी राज्यों से अपने राष्ट्रीय हित के अनुसार संबंधो को सुधारने का प्रयास कर रहा है। यह शोधपत्र से भारत-जापान संबंधों की यात्रा का वृत्तांत प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द: भारत , जापान रणनीतिक, वैश्विक, वर्तमान ।

परिचय:-

समृद्ध इतिहास और जीवंत संस्कृतियों वाले दो प्रमुख एशियाई देश भारत और जापान ने एक रणनीतिक साझेदारी विकसित की है जो पिछले कुछ दशकों में काफी बढ़ गई है। यह संबंध आपसी सम्मान, साझा मूल्यों और क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक विकास और वैश्विक शांति में समान हितों की विशेषता है। भारत और जापान के बीच संबंध 6वीं शताब्दी से शुरू हुए हैं जब बौद्ध धर्म को जापान में लाया गया था। सदियों से, सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान फले-फूले, जिससे आपसी सम्मान और समझ की नींव पड़ी। जापान के साथ भारत की सबसे पहली दर्ज की गई सीधी बातचीत नारा के तोडाजी मंदिर में हुई थी, जहाँ 752 ईस्वी में भारतीय भिक्षु बोधिसेना द्वारा भगवान बुद्ध की भव्य प्रतिमा का अभिषेक या नेत्र-प्रक्षालन समारोह किया गया था। शिचिफुकुजिन या जापान के सात भाग्यशाली देवताओं की जड़ें हिंदू परंपराओं में हैं। हाल के इतिहास में, जापान से जुड़े उल्लेखनीय भारतीयों में स्वामी विवेकानंद, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर, जेआरडी टाटा, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और न्यायाधीश राधा बिनोद पाल शामिल हैं। 1903 में स्थापित जापान-भारत एसोसिएशन, जापान का सबसे पुराना अंतर्राष्ट्रीय मैत्री संगठन है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, 1949 में, भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने टोक्यो के यूनो चिड़ियाघर को एक भारतीय हाथी उपहार में दिया, जो युद्ध के बाद से उबरने वाले जापानी लोगों के लिए आशा का प्रतीक था। 28 अप्रैल, 1952 को, जापान और भारत ने एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए और राजनयिक संबंध स्थापित किए, जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान के सबसे शुरुआती शांति समझौतों में से एक था। तब से, दोनों देशों ने मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे हैं, जिसमें भारत के लौह अयस्क ने जापान के युद्ध के बाद के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1400 से अधिक वर्षों के संपर्क में, भारत और जापान ने लगातार सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे हैं और कभी भी एक-दूसरे के विरोधी नहीं रहे हैं। आज, वे एक 'विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी' साझा करते हैं।

<u>वर्तमान में भारत जापान-सम्बन्ध:-</u>

भारत और जापान एक वैश्विक दृष्टिकोण साझा करते हैं जो सतत विकास के माध्यम से शांति, स्थिरता और आपसी समृद्धि पर केंद्रित है। उनकी साझेदारी साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, मानवाधिकारों, बहुलवाद, खुले समाज और कानून के शासन पर आधारित है। यह राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक हितों के गहरे संरेखण को दर्शाता है। दोनों देश वैश्विक और क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान करने में एक-दूसरे को सक्षम भागीदार के रूप में देखते हैं। वे मानते हैं कि एक मजबूत, समृद्ध और गतिशील भारत जापान को लाभ पहुँचाता है, और इसके विपरीत। 2012 में उनके राजनयिक संबंधों की 60वीं वर्षगांठ ने उनके द्विपक्षीय संबंधों में निरंतर वृद्धि और प्रगति को उजागर किया।

राजनयिक संबंधों के पहले दशक में, भारत और जापान ने महत्वपूर्ण उच्च स्तरीय आदान-प्रदान किए, जिसमें 1957 में जापानी प्रधान मंत्री नोबुसुके किशी की भारत यात्रा और उसी वर्ष प्रधान मंत्री नेहरू की टोक्यो की वापसी यात्रा शामिल थी। हालांकि, बाद के दशकों में गति धीमी हो गई, और 1980 के दशक तक कम उच्च स्तरीय यात्राएं हुईं। एक उल्लेखनीय विकास 1980 के दशक की शुरुआत में सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन का भारत में निवेश था, जिसने ऑटोमोबाइल क्षेत्र में क्रांति ला दी। जापान ने 1991 के भुगतान संतुलन संकट के दौरान भारत की सहायता करके एक मित्र के रूप में अपनी विश्वसनीयता का भी प्रदर्शन किया। 21वीं सदी में भारत-जापान संबंधों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया। 2000 में प्रधान मंत्री मोरी की भारत यात्रा ने जापान-भारत वैश्विक साझेदारी को लॉन्च किया, प्रमुख मील के पत्थरों में 2011 में व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) और कई उच्च स्तरीय यात्राएं और समझौते शामिल हैं, जैसे कि प्रधानमंत्री मोदी की 2014 की जापान यात्रा के दौरान। इन प्रयासों से महत्वपूर्ण निवेश, हाई-स्पीड रेल परियोजनाएं और विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग हुआ, जिससे द्विपक्षीय संबंध मजबूत हुए।

भारत और जापान के बीच आर्थिक संबंधों में उनकी पूरक अर्थव्यवस्थाओं के कारण महत्वपूर्ण वृद्धि क्षमता है। जापान भारत के बड़े, बढ़ते बाजार और मानव संसाधनों में तेजी से रुचि ले रहा है। अगस्त 2011 से प्रभावी भारत-जापान व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA) भारत का सबसे व्यापक व्यापार समझौता है, जिसमें माल, सेवाएं, निवेश, बौद्धिक संपदा और बहुत कुछ शामिल है, और इसका लक्ष्य दस वर्षों में 94% व्यापारिक वस्तुओं पर टैरिफ को समाप्त करना है। 1958 से भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय दाता जापान बिजली, परिवहन, पर्यावरण और बुनियादी मानवीय जरूरतों में परियोजनाओं का समर्थन करता है। प्रमुख परियोजनाओं में अहमदाबाद-मुंबई हाई स्पीड रेल, वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर और दिल्ली मेट्रो के साथ चेन्नई-बेंगलुरु औद्योगिक कॉरिडोर शामिल हैं। सांस्कृतिक संबंध और लोगों के बीच आदान-प्रदान भारत-जापान संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शैक्षणिक आदान-प्रदान और पर्यटन पहलों ने आपसी समझ और प्रशंसा को गहरा किया है। 2007 में जापान-भारत मैत्री वर्ष और 2022 में राजनयिक संबंधों की 70वीं वर्षगांठ का जश्न सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देने के प्रयासों के उदाहरण हैं।

भारत और जापान ने साझा मूल्यों और समान रणनीतिक हितों से प्रेरित एक मजबूत और गतिशील साझेदारी तैयार की है। 21वीं सदी की जटिलताओं से निपटने के दौरान, उनका रिश्ता क्षेत्रीय और वैश्विक व्यवस्था को आकार देने में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाने के लिए तैयार है। एशिया में चीन के प्रभुत्व को संतुलित करने के लिए भारत-जापान के बीच घनिष्ठ संबंधों का औचित्य दिया जा सकता है। हालाँकि दोनों देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों के कारण चीन को नियंत्रित करना संभव नहीं है, लेकिन भारत और जापान को चीन के मुखर उदय से शक्ति असंतुलन को दूर करने की आवश्यकता है, जो क्षेत्रीय और समुद्री स्थिरता को प्रभावित करता है। एक मजबूत भारत-जापान साझेदारी क्षेत्रीय संतुलन और स्थिरता को बहाल कर सकती है और इसके लिए आपसी समर्थन की आवश्यकता है, जो उनके गठबंधन के रणनीतिक महत्व को उजागर करता है। साझा लोकतांत्रिक मूल्यों और नियम-आधारित व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित यह साझेदारी संतुलित और समृद्ध एशिया के लिए आवश्यक है।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद से भी अब तक दोनों देशों के बीच मधुर सम्बन्ध रहे हैं। वर्तमान में भारत की ओर से भी चीन के साथ रिश्तों और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जापान को काफी महत्व दिया गया है। चीन के दोनों ही देशों के साथ सीमा विवाद हैं। भारत की और से भी चीन के साथ रिश्तों और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जापान को बहुत महत्व दिया गया है। पूर्व प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह सरकार की पूर्व की और देखो नीति ने भारत को जापान के साथ मधुर और पहले से बेहतर सम्बन्ध बनाने की और प्रेरित किया है। दिसम्बर 2006 में भारतीय प्रधानमन्त्री की जापान यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित भारत-जापान सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी समझौता इसका ज्वलन्त उदहारण है। रक्षा के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच 2007 से लगातार सहयोग मजबूत हुए हैं और दोनों की रक्षा इकाइयों और सेनाओं ने कई संयुक्त रक्षा अभ्यास किये हैं। अक्टूबर 2008 में जापान ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किये जिसके तहत वह भारत को कम ब्याज दरों पर 450 अरब अमेरिकी डालर की धनराशि दिल्ली-मुम्बई हाईस्पीड रेल गलियारे के विकास हेतु देगा। विश्व में यह जापान द्वारा इकलौता ऐसा उदाहरण है जो भारत के साथ इसके मजबूत आर्थिक रिश्तों को दर्शाता है।

जापान के प्रधानमन्त्री शिंजो आबे ने जनवरी 2014 में भारत की सपत्नीक यात्रा की जिसके दौरान वे इस वर्ष गणतन्त्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बुलाये गये थे। इसके बाद मनमोहन सिंह जी के साथ हुई शिखर बैठक दोनों प्रधानमन्त्रियों के बीच 2006 की शुरुआत के बाद आठवीं शिखर बैठक थी। इस बैठक में जापान ने भारत को विभिन्न परियोजनाओं के लिये 200 अरब येन (लगभग 122 अरब रुपये) का ऋण देने की पेशकश की और हाई स्पीड रेल, रक्षा, मेडिकल केयर, औषधि निर्माण और कृषि तथा तापीय ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग की भी पेशकश की। भारत जापान श्रीलंका के पूर्वी भाग में त्रिंकोमाली में तापीय विद्युत संयन्त्र निर्माण में भी भागीदारी करने वाले हैं।

भारत और जापान के बीच भी करीबी सैन्य सम्बन्ध हैं। उन्होंने एशिया-प्रशान्त और हिन्द महासागर में समुद्री लेन की सुरक्षा को बनाये रखने और अन्तरराष्ट्रीय अपराध, आतंकवाद, समुद्री डकैती और सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार से निपटने के लिए सहयोग किया है। दोनों राष्ट्रों ने अक्सर संयुक्त सैन्य अभ्यास किया है और प्रौद्योगिकी पर सहयोग किया है। भारत और जापान ने 22 अक्टूबर 2008 को एक सुरक्षा समझौते का समापन किया। जुलाई 2014 में, भारतीय नौसेना ने इण्डो-पैसिफिक समुद्री सुरक्षा पर साझा दृष्टिकोण को दर्शाते हुए जापानी और अमेरिकी नौसेनाओं के साथ एक्सरसाइज मालाबार में भाग लिया।

जापान और भारत के बीच मजबूत सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं, जो मुख्य रूप से जापानी बौद्ध धर्म पर आधारित है ,वर्ष 2017 में जापान और भारत के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ मनाई गई। दोनों देशों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देने के लिए जापान और भारत दोनों में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसका विषय था "पुनरुत्थानशील जापान, जीवंत भारत: नए दृष्टिकोण, नए आदान-प्रदान।"

नवंबर 2016 में प्रधानमंत्री मोदी की जापान यात्रा के दौरान, दोनों प्रधानमंत्रियों ने जापान और भारत के बीच लोगों के बीच आदान-प्रदान को और बढ़ाने के लिए वर्ष 2017 को जापान-भारत मैत्रीपूर्ण आदान-प्रदान का वर्ष घोषित किया। दोनों देशों में विभिन्न स्मरणोत्सव कार्यक्रम आयोजित किए गए।

2022 में जापान भारत समेत दक्षिण-पश्चिम एशिया के सात देशों के साथ वर्षगांठ मनाएगा। जापान ने दक्षिण-पश्चिम एशिया के देशों के साथ जापान के संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के उद्देश्य से 2022 को "जापान-दक्षिण-पश्चिम एशिया विनिमय वर्ष" के रूप में नामित किया है।

भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी नवम्बर 2016 में तीन दिवसीय यात्रा पर जापान गये जहाँ भारत और जापान के बीच नाभिकीय ऊर्जा पर एक महत्वपूर्ण समझौता हुआ। यह पहली बार है जब जापान ने परमाणु अप्रसार सन्धि के गैर-हस्ताक्षरकर्ता के साथ इस तरह के समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह सौदा जापान को भारत को परमाणु रिएक्टर, ईंधन और प्रौद्योगिकी की आपूर्ति करने का अधिकार देता है। इस सौदे से भारत को दिल्ली में योजनाबद्ध छह परमाणु रिएक्टर बनाने में सहायता करने का लक्ष्य था, जिसे 2032 तक पूरा किया जायेगा।

अगस्त 2017 में, दोनों देशों ने पूर्वोत्तर भारत के विकास के लिए जापान-भारत समन्वय मंच की स्थापना की घोषणा की, जिसे भारत द्वारा पूर्वोत्तर भारत के विकास के लिए सहयोग के प्राथमिकता वाले विकास क्षेत्रों की पहचान करने के लिए एक समन्वय मंच के रूप में वर्णित किया गया है। यह मंच उत्तर भारत में कनेक्टिविटी, सड़कों बिजली के बुनियादी ढांचे, खाद्य प्रसंस्करण, आपदा प्रबंधन, और जैविक खेती और पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रणनीतिक परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करेगा। एक जापानी दूतावास के प्रवक्ता ने कहा कि उत्तर-पूर्व का विकास भारत और उसकी अधिनियम पूर्व नीति के लिए एक प्राथमिकता था और जापान ने भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया और ऐतिहासिक से जोड़ने के लिए अपने भौगोलिक महत्व के लिए उत्तर पूर्व में सहयोग पर विशेष जोर दिया।

हालाँकि भारत और जापान के बीच लगभग दो दशकों से रक्षा संबंधी विचारों का आदान-प्रदान होता रहा है और अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया के साथ चतुर्भुज सुरक्षा संवाद में भागीदार के रूप में दोनों ही देशों ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र को खुला एवं मुक्त बनाए रखने में साझा हित की घोषणा की है, लेकिन उनके बीच द्विपक्षीय सहयोग में अभी भी कमी ही है। हिंद-प्रशांत में अमेरिका-चीन हस्तक्षेप ने दोनों पक्षों को अपने वांछित रणनीतिक उद्देश्यों को लागू करने से अवरुद्ध रखा है।

अक्टूबर 2008 में प्रधानमंत्री सिंह की जापान यात्रा के दौरान, दोनों नेताओं ने "जापान और भारत के बीच सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त घोषणा" जारी की। जापान और भारत के बीच सुरक्षा और रक्षा वार्ता के विभिन्न ढाँचे भी हैं जिनमें विदेश और रक्षा मंत्रिस्तरीय बैठक ("2+2" बैठक), वार्षिक रक्षा मंत्रिस्तरीय वार्ता और तटरक्षक-से-तटरक्षक वार्ता शामिल हैं। सितंबर 2022 में, दूसरी "2+2" बैठक टोक्यो में आयोजित की गई थी।

9 सितंबर 2020 को जापान सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच जापान के आत्मरक्षा बलों और भारतीय सशस्त्र बलों के बीच आपूर्ति और सेवाओं के पारस्परिक प्रावधान के संबंध में समझौते पर हस्ताक्षर किए गए (तथाकथित "अधिग्रहण और क्रॉस-सर्विसिंग समझौता" या ACSA)। ACSA 11 जुलाई, 2021 को लागू हुआ।

रक्षा संबंध भारत-जापान रक्षा और सुरक्षा साझेदारी गुजरते वर्षों में क्रमशः धर्म गार्जियन' और 'मालाबार सहित द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय अभ्यासों से विकसित हुई है। मिलन अभ्यास में पहली बार जापान की भागीदारी भी स्वागतयोग्य कदम है। जापान और भारत के बीच त्रि-सेवा विनिमयों को संस्थागत रूप दिया गया है और इस प्रकार एक 'त्रय' पूर्ण हुआ है। दोनों देशों के तटरक्षकों के बीच वर्ष 2006 से ही नियमित वार्षिक विनिमय होता रहा है। इसके साथ ही, दोनों देशों के बीच 'जापान और भारत विजन 2025- विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक भागीदारी भी स्थापित है जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र तथा विश्व की शांति एवं समृद्धि के लिये मिलकर कार्य करने का ध्येय रखता है।

हिंद-प्रशांत में किसी भी आधिपत्य पर अंकुश भारत और जापान को अपनी सैन्य रणनीति को रूपांतरित करने और हिंद-प्रशांत में किसी आधिपत्य (अमेरिका या चीन के द्वारा) के उदय को रोकने के लिये साझा हित पर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। डिजिटल सशक्तीकरण के लिये परस्पर सहयोग करना डिजिटल रूपांतरण के लिये संयुक्त परियोजनाओं को बढ़ावा देकर डिजिटल अवसंरचना को उन्नत करने की दृष्टि से भारत और जापान टेलीकॉम नेटवर्क सिक्यूरिटी, सबमेरीन केबल सिस्टम एवं क्वांटम कम्युनिकेशन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना सहयोग के लिये हाथ मिला सकते हैं।

भारत में जापानी राजदूत हिरोशी सुजुकी ने हाल ही में कहा, जापानी टीम और भारतीय टीम एक साथ मिलकर काम कर रही है और मेरी नजर में यह पहले से ही एक क्रांति है। जापान और भारत विशेष संबंधों विशेष साझेदारी का आनंद लेते हैं, जो रणनीतिक और वैश्विक दोनों हैं। इसलिए हम रक्षा और सुरक्षा जैसे कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय मंच हम संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में निकट सहयोग कर रहे हैं। भारत और जापान के बीच व्यापार असंतुलन धीरे-धीरे कम हो गया है, जापान को भारतीय निर्यात हर साल बढ़ रहा है. जिसमें मुख्य रूप से पेट्रोलियम उत्पाद, रसायन और तत्व शामिल हैं।

भारत के विदेश मंत्रालय के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए भारत और जापान के बीच द्विपक्षीय व्यापार कुल 20.57 बिलियन अमरीकी डॉलर था। जापान को भारत का निर्यात 6.18 बिलियन अमरीकी डॉलर था जबकि जापान से भारत का आयात 14.39 बिलियन अमरीकी डॉलर था। पिछले साल अपनी भारत यात्रा के दौरान, प्रधान मंत्री फुमियो किशिदा नै अगले पांच वर्षों में भारत में 42 बिलियन अमरीकी डालर के निवेश की घोषणा की। विशेषज्ञों का कहना है कि जापानी शक्ति गलियारे भारत को दुनिया के सबसे विश्वसनीय भागीदारों में से एक मानते हैं।

हाल के वर्षों में, जापान और भारत के बीच आर्थिक संबंध लगातार विस्तारित और गहरे हुए हैं। दोनों देशों के बीच व्यापार की मात्रा में वृद्धि हुई है। भारत जापान का 18वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था, और 2021 में जापान भारत का 13वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था। साथ ही, जापान से भारत में प्रत्यक्ष निवेश में वृद्धि हुई है, और वित्त वर्ष 2021 में जापान भारत के लिए 5वां सबसे बड़ा निवेशक था। भारत में जापानी निजी क्षेत्र की रुचि बढ़ रही है, और, वर्तमान में, 2021 में लगभग 1,439 जापानी कंपनियों की भारत में शाखाएँ हैं।

हाल ही में शिखर सम्मेलनों में, दोनों नेताओं ने पुष्टि की कि वे अगले 5 वर्षों में जापान से भारत में सार्वजनिक और निजी निवेश और वित्तपोषण के 5 ट्रिलियन येन के लक्ष्य के मद्देनजर भारत में जापानी कंपनियों द्वारा सक्रिय निवेश को बढ़ावा देंगे, जिसे मार्च 2022 में प्रधान मंत्री किशिदा की भारत यात्रा के अवसर पर निर्धारित किया गया था, साथ ही भारत में जापानी कंपनियों के सुचारू संचालन के लिए कारोबारी माहौल को और बेहतर बनाने के लिए भारतीय पक्ष के महत्व पर भी सहमति व्यक्त की, जिसमें "भारत-जापान औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता भागीदारी" के माध्यम से आपूर्ति श्रृंखलाओं के विविधीकरण और वृद्धि के लिए सहयोग शामिल है। दोनों नेताओं ने कार्बन तटस्थता प्राप्त करने और वैश्विक स्तर पर ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मार्च 2022 में प्रधान मंत्री किशिदा की भारत यात्रा के दौरान घोषित "स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी" को बढ़ावा देने और "जापान-भारत ऊर्जा मंत्रिस्तरीय वार्ता" और अन्य पहलों के माध्यम से हाइड्रोजन, अमोनिया और एलएनजी के क्षेत्रों में ठोस सहयोग को बढ़ावा देने पर भी सहमति व्यक्त की।

भारत पिछले कई दशकों से जापानी ओडीए ऋण का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता रहा है। दिल्ली मेट्रो ओडीए के उपयोग के माध्यम से जापानी सहयोग के सबसे सफल उदाहरणों में से एक है। जापान "एक्ट ईस्ट" नीति और "गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढांचे के लिए साझेदारी" के बीच तालमेल के माध्यम से दक्षिण एशिया को दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ने वाली रणनीतिक कनेक्टिविटी का समर्थन करने में सहयोग करना जारी रखता है। इसके अलावा, जापान और भारत ने जापान की शिंकानसेन प्रणाली को लागू करके भारत में हाई-स्पीड रेलवे बनाने की प्रतिबद्धता जताई थी, जो जापान-भारत संबंधों की प्रमुख परियोजना है।

निष्कर्ष:-

भारत और जापान के बीच संबंध आज के जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य में रणनीतिक साझेदारी की क्षमता और शक्ति का प्रमाण है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान में निहित ऐतिहासिक संबंधों से लेकर व्यापार, रक्षा और प्रौद्योगिकी में आधुनिक सहयोग तक, भारत और जापान ने आपसी सम्मान, साझा मूल्यों और समान हितों के आधार पर एक मजबूत बंधन बनाया है। यह साझेदारी न केवल दोनों देशों को आर्थिक और रणनीतिक रूप से लाभान्वित करती है, बल्कि एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि में भी योगदान देती है। 21वीं सदी की चुनौतियों और अवसरों का सामना करते हुए, भारत-जापान संबंध सहयोग, नवाचार और प्रगति के प्रतीक के रूप में कार्य करते हैं, जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और वैश्विक साझेदारी के लिए एक सकारात्मक उदाहरण स्थापित करते हैं।

संदर्भ सूची:-

1. डी. के हरि, हेमा हरि (2017), 'इण्डो-जापान संबंध', श्री श्री पब्लिकेशन पू. 3

2. उपरोक्त,

3. के. टी. एस. सराओ (2015) आधुनिक जापान का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली,

4. वर्ल्ड फोकस 2020,

5. www.jcwa.com

6. दैनिक भास्कर,

7. हिंदुस्तान टाइम्स, पू. सयादकिये

8. www.orf.com

9. https://www.mofa.go.jp/region/asia-paci/india/data.html

10.वर्ल्ड फोकस 2018

11.https://forumforglobalstudies.com/strengthening-strategic-ties-india-japan-relations-in-the-21st-century/